जॉर्ज वाशिंगटन

और चेरी का पेड़

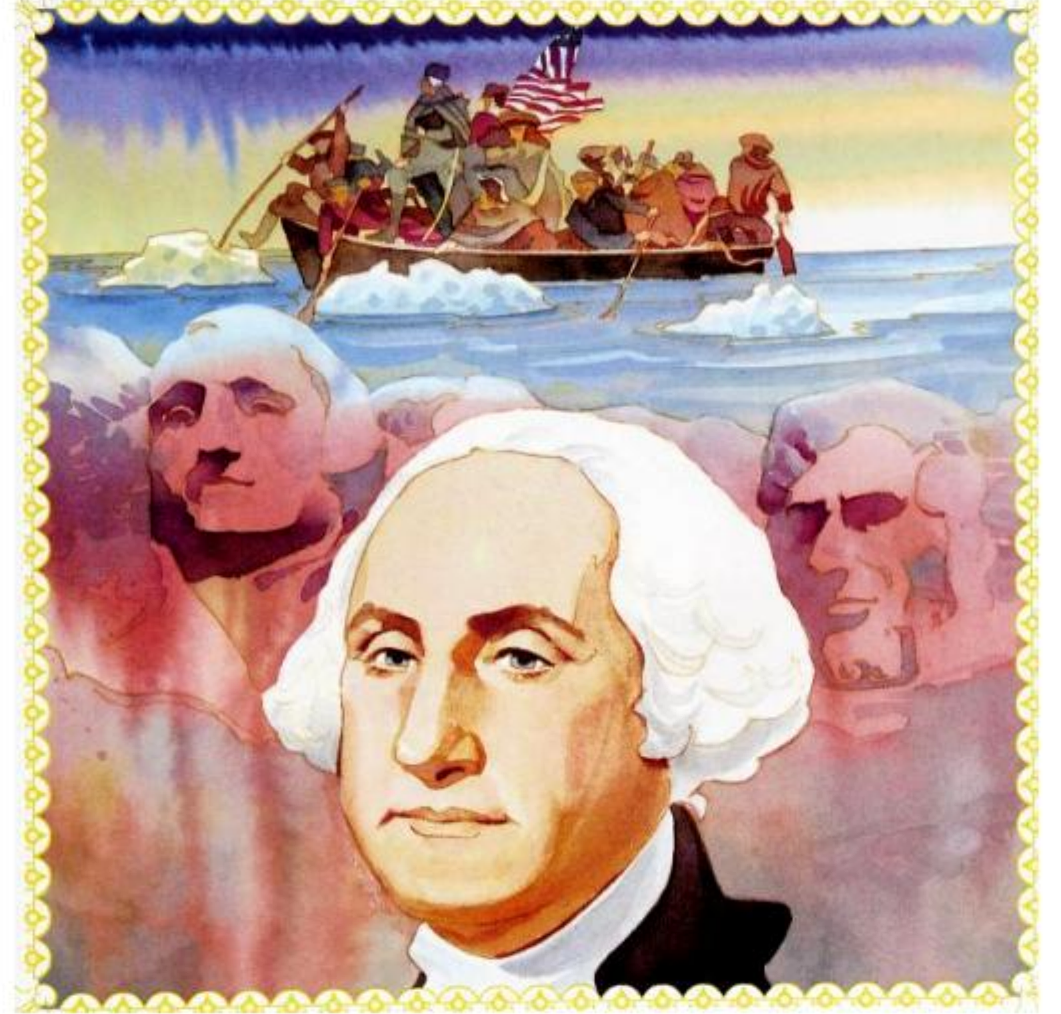


ईमानदारी की कहानी

जॉर्ज वाशिंगटन के बारे में कई कहानियां और किताबें लिखी गई हैं. जब अमेरिकी उपनिवेश अपनी आजादी के लिए लड़ रहा था, तो जॉर्ज वाशिंगटन ने अंग्रेजों के खिलाफ सैनिकों की कमान संभाली. जब नए देश को एक नेता की आवश्यकता थी तो वाशिंगटन ने देश के पहले राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया.

जॉर्ज वॉशिंगटन की ईमानदारी की कहानी उतनी ही प्रसिद्ध है जितनी उनकी बहादुरी की सच्ची कहानियां. इन्हें किंवदंती कहा जाता है क्योंकि किसी के पास इस बात का कोई रिकॉर्ड नहीं है कि यह घटना वास्तव में घटी थी, या नहीं. क्या युवा जॉर्ज वाशिंगटन ने एक चेरी का पेड़ काटा था? शायद नहीं. लेकिन यह किंवदंती यह बताती है कि हर किसी के लिए सच बोलना कितना महत्वपूर्ण है.

आइए हम उस समय पर वापस जाएं जब जॉर्ज वाशिंगटन एक युवा लड़का था. उसे अपने पिता से सिर्फ एक ऐसा उपहार मिला था जो उनके जैसे किसी भी भी लड़के को पसंद आता.





युवा जॉर्ज वाशिंगटन के लिए वो एक कितना अच्छा दिन था! महज छह साल की उम्र में उसके पास अपनी खुद की कुल्हाड़ी थी. जॉर्ज को अपनी नई कुल्हाड़ी पर गर्व था. कुल्हाड़ी उसके छोटे हाथों में ठोस लग रही थी. उसका ब्लेड चमकदार और तेज था. जॉर्ज ने हवा में कुल्हाड़ी को घुमाया, वो उस पर सूरज की चमक को देखना चाहता था.

पिता ने उसे रोका. "यह कोई खिलौना नहीं है, जॉर्ज," पिता ने चेतावनी दी. "यदि तुम सावधान नहीं रहे तो यह बहुत नुकसान भी कर सकती है. इसका उपयोग हमेशा बहुत सावधानी से करना.“

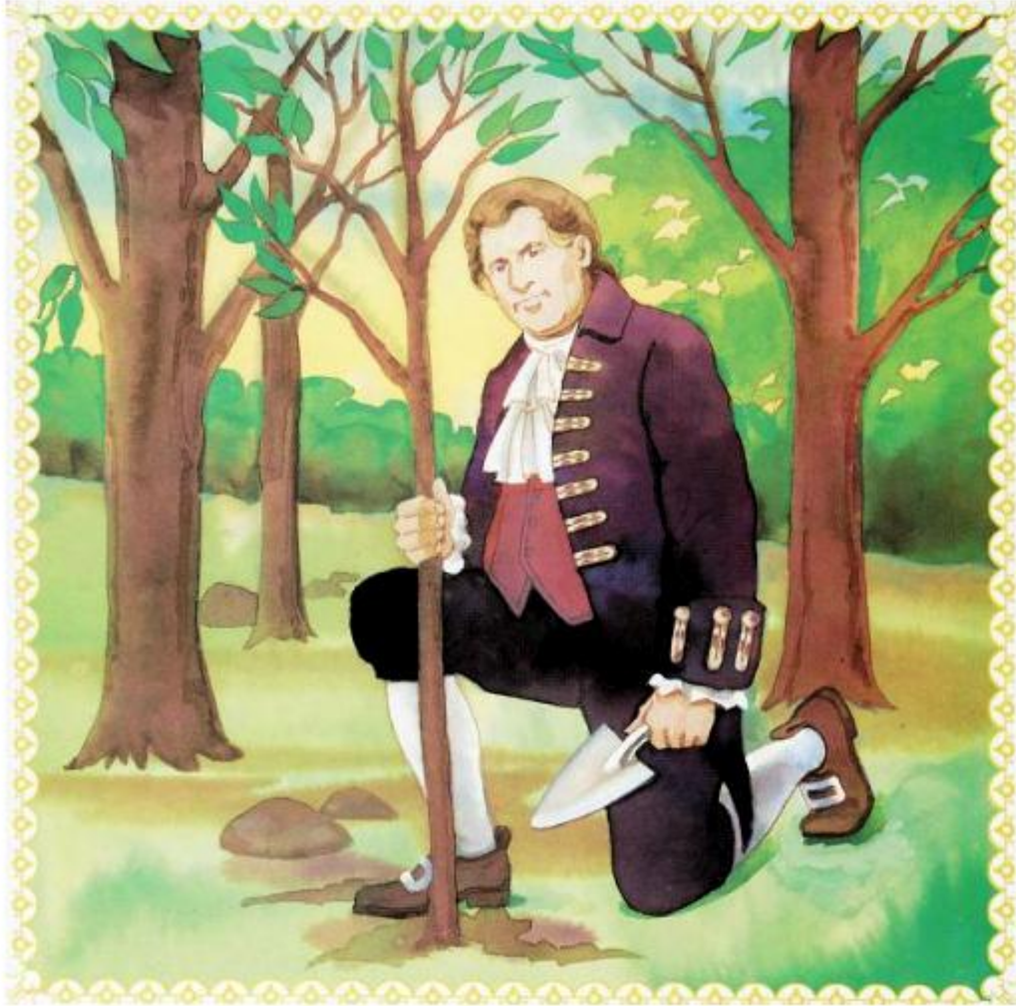
जॉर्ज ने अपने पिता की बातों पर ध्यान दिया. पिताजी उससे एक आदमी की तरह बातें कर रहे थे. वास्तव में किसी कुल्हाड़ी का मालिक होना एक गंभीर बात थी. जॉर्ज ने वादा किया कि वो हमेशा उसके साथ बहुत सावधानी बरतेगा. लेकिन जब वह बाहर गया तब जॉर्ज गंभीर कम और खुद को ज्यादा उत्साहित महसूस करने लगा. उसे परिवार के खेत में तमाम ऐसी चीज़ें दिखीं जिन्हें वो काट सकता था. जॉर्ज ने खेत में कुल्हाड़ी का तेज़ी से परीक्षण करना शुरू किया.

पहले जॉर्ज ने मक्का के खेत के किनारे लगे खरपतवार पर अपनी कुल्हाड़ी का परीक्षण किया. कुल्हाड़ी उनके पतले तनों से होकर गुजरी और लम्बे खरपतवारों की कतार झट से एक ढेर बन गई. जॉर्ज मुस्कुराया. उसके बाद उसने मक्का के पौधों के मोटे डंठलों को अपना निशाना बनाया.

गज़ब! मक्के के तीन डंठल एक साथ गिर गए. वो चौंक गया. उसने अपनी कुल्हाड़ी को एक नए सम्मान के साथ देखा. पिताजी ने सही कहा था. उसे सावधान रहना होगा. फिर जॉर्ज ने देखा कि एक भुट्टा ज़मीन पर गिरा पड़ा था. भुट्टा, मक्के की डंठल से भी मोटा था. जॉर्ज की कुल्हाड़ी ने बिना किसी समस्या के भुट्टे को आधे में काट दिया.

मकई के खेत के पास जॉर्ज अपने पिता के फलों के पेड़ों की ओर चल पड़ा. उसके पिता को अपने मीठे सेब, आड़ू और नाशपाती पर गर्व था. यह पेड़ उनके परिवार को खाने को मीठे फल देते थे. पिताजी पेड़ों की शाखाओं की छंटनी करते थे और किसी बीमारी के संकेत के लिए उनका मुयायना करते थे.





मिस्टर वाशिंगटन ने अपने सबसे कम उम्र के पेड़ पर अतिरिक्त ध्यान दिया. वो एक चेरी का पेड़ था, और वो कहीं दूर से आया था. जब मिस्टर वाशिंगटन ने इसे लगाया था तब चेरी का पेड़ सिर्फ एक छोटा पौधा था. हर साल मिस्टर वाशिंगटन ने उसे और मजबूत होते हुए देखा. इस साल, इसकी शाखाओं पर फूल लगे थे. शायद, उन्होंने सोचा, वो इस साल फल भी देगा. मिस्टर वाशिंगटन ने लाल-लाल चेरीज़ के बारे में सोचा. फिर उन्होंने सोचा कि उन चेरीज़ से मिसेज वाशिंगटन क्या-क्या बना सकती थीं. वो खुद पर मुस्कुराए और उन्होंने चेरी के पेड़ को प्यार से सहलाया.

जब मिस्टर वॉशिंगटन रात का खाना खाने के लिए घर वापस गए तब जॉर्ज भागकर उनके पास गया और उसने कहा, "पिताजी, यह कुल्हाड़ी बहुत अच्छी तरह से काम करती है.“

उसके पिता मुस्कुराए. "हाँ. मैंने तुम्हें इसका आज देखा उपयोग करते हुए."
"इस तरह के अद्भुत उपहार के लिए फिर से धन्यवाद, पिताजी ," जॉर्ज ने कहा और फिर वो रात के खाने के लिए अंदर भागा.

जब वे रात के खाने के लिए बैठे, जॉर्ज ने कमरे के एक कोने में अपनी कुल्हाड़ी रख दी. पर खाने के दौरान, वो लगातार उसे टकटकी लगाए देखता रहा. वह उसके साथ आगे क्या करेगा?

जॉर्ज की माँ ने देखा कि जॉर्ज कुल्हाड़ी को निहार रहा था. "मुझे लगता है कि तुम्हें अपनी कुल्हाड़ी का इस्तेमाल किसी उपयोगी काम के लिए करना चाहिए, जॉर्ज," माँ ने कहा. "कल, मैं तुम्हें आग जलाने के लिए लकड़ी काटने का काम दूँगी."

"ज़रूर, माँ!" जॉर्ज ने कहा. "मैं आज रात को ही वो काम शुरू कर सकता हूं!"

श्रीमती वाशिंगटन ने कहा, "उससे पहले तुम्हें अच्छी नींद की आवश्यकता होगी." जॉर्ज ने अपने बिस्तर के नीचे अपनी कुल्हाड़ी रखी. वो बिस्तर पर लेट गया और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं. जॉर्ज को काफी देर तक नींद ही नहीं आई. वह सुबह तक इंतजार नहीं कर सकता था. उसने अपने आप को लकड़ी का एक ऊंचे ढेर काटते हुए देखा, और फिर टीले, और फिर जलाऊ लकड़ी के के पहाड़ को! अंत में जब जॉर्ज सोया, तो उसने सपने में खुद को एक महान लकड़हारा जैसे देखा. अपनी कुल्हाड़ी के एक वार से उसने पूरे जंगल को काट डाला था.





अगली सुबह, जॉर्ज ने फटाफट नाश्ता किया. अंतिम कौर निगलते ही उसने माँ से कहा, "मैं अब लकड़ी काटने को तैयार हूँ." माँ ने उसे घर के पीछे लकड़ी के तनों का ढेर दिखाया.

जॉर्ज ने लकड़ी के तनों का ढेर देखा. वो लकड़ी का ढेर एक पहाड़ नहीं था, वो मुश्किल से एक टीला था. फिर जॉर्ज काम पर लग गया. उसने लंबी, पतली शाखाओं को छोटी-छोटी जलाऊ लकड़ियों में काटा. फिर उसने उनके और छोटे टुकड़े किये. उनके और छोटे टुकड़े करना मुश्किल थे. फिर वो अंदर मां को यह बताने गया कि उसने अपना काम समाप्त कर लिया था.

"मैंने काम ख़त्म कर दिया है, माँ. क्या मेरे लिए और कोई काम है?" जॉर्ज ने पूछा.

"नहीं. जॉर्ज, तुम अब जाकर खेल सकते हो," माँ ने कहा.

जॉर्ज खेलना नहीं चाहता था. वो और लकड़ियां काटना चाहता था.

जॉर्ज बाहर गया. जॉर्ज ने अपनी कुल्हाड़ी का फिर से परीक्षण करने का फैसला किया. उसने मोटे बाड़ के खम्बे पर वार किया. पहले वार में कुल्हाड़ी का ब्लेड लकड़ी में धंस गया. जॉर्ज को उसे निकालने के लिए खींचना पड़ा. "ठीक है, वह बहुत मोटी थी," जॉर्ज ने सोचा. फिर उसने युवा चेरी के पेड़ के तने को देखा.

उसे चेरी के पेड़ का तना बिलकुल सही लगा. वो सेब और नाशपाती के पेड़ों जैसे अभी पूर्ण विकसित नहीं हुआ था. जॉर्ज ने चेरी के पेड़ पर वार किया. ब्लेड पेड़ के तने में धंस गया लेकिन आसानी से मुक्त हो गया. पेड़ को काटने के लिए उसे कुल्हाड़ी के कुछ वार करने पड़े! फिर पेड़ गिर पड़ा. जॉर्ज ने उसे काट दिया. जब जॉर्ज गिरे हुए पेड़ को गर्व से देख रहा था, तब उसे याद आया कि उसके पिताजी को वो चेरी का पेड़ कितना पसंद था. उसे यह भी याद आया कि कैसे पिताजी ने उसे कुल्हाड़ी के साथ सावधानी बरतने को कहा था.

उसके बाद जॉर्ज जल्दी से लकड़ी रखने वाली कोठरी में गया और वहां जाकर एक अंधेरे कोने में बैठ गया.





मिस्टर वाशिंगटन ने घर के रास्ते में गिरे हुए चेरी पेड़ को देखा. उन्होंने देखा कि उसके धड़ को कई वार करके काटा गया था. तब उन्हें एहसास हुआ कि घर में कोई चेरी नहीं होंगी. कोई चेरी की मिठाई भी नहीं होगी. उनकी सारी मेहनत और देखभाल के बाद, चेरी का पेड़ नष्ट हो गया था. जॉर्ज के पिता उदास होकर घर लौटे.

जॉर्ज ने अपने पिता को कोठरी के सामने से गुज़रते हुए देखा. धीरे-धीरे, उसने पिता का घर तक पीछा किया. उसने अपनी कुल्हाड़ी कसकर पकड़ रखी.

पिताजी ने दरवाजे में जॉर्ज को घुसते हुए सुना. उन्होंने जॉर्ज की तरफ देखा. उन्होंने जॉर्ज की कुल्हाड़ी को देखा. जॉर्ज साफ़ देख सकता था कि पिताजी बहुत गुस्से में थे. "जॉर्ज," उन्होंने कहा, "क्या तुम जानते हो कि मेरे चेरी के पेड़ को किसने काटा है?“

जॉर्ज ने एक गहरी सांस ली. उसने सजा पाने के बारे में नहीं सोचने की कोशिश की. उसके बजाय जॉर्ज ने कहा, "मैं झूठ नहीं बोल सकता पिताजी, मैंने ही आपका चेरी का पेड़ काटा है."

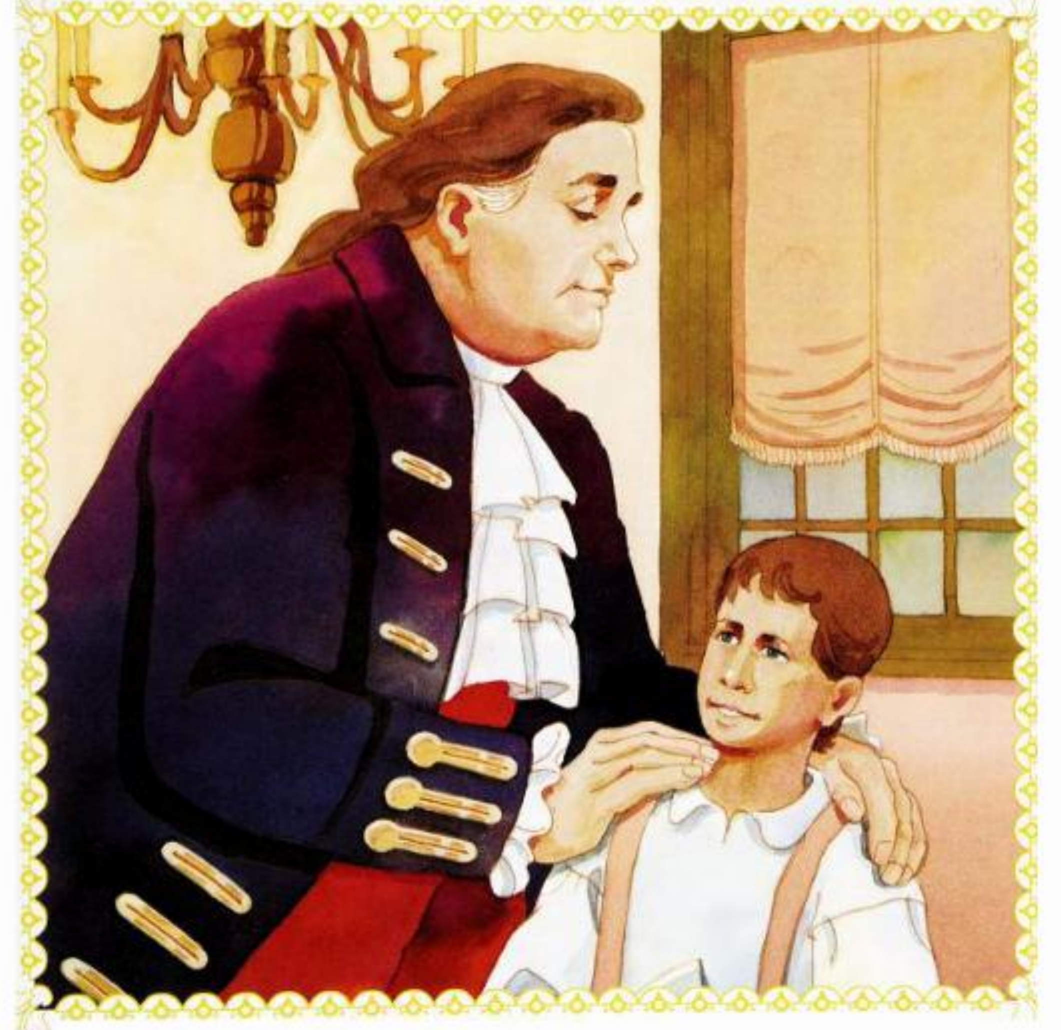
जॉर्ज ने अपने पैरों की तरफ देखा. उसे रोना आ रहा था. "मैं कुल्हाड़ी के साथ सावधान नहीं था. मुझे खेद है, पिताजी." फिर उसने अपनी सांस रोकी और सजा का इंतज़ार किया.

जॉर्ज ने अपने पिता के हाथों को अपने कंधों पर महसूस किया. "मुझे देखो, बेटा." मिस्टर वाशिंगटन ने कहा. फिर जॉर्ज ने बड़ी हिम्मत करके अपने पिता की ओर देखा. जॉर्ज को आश्चर्य हुआ कि अब पिताजी नाराज नहीं लग रहे थे. वास्तव में, मिस्टर वाशिंगटन शांत दिख रहे थे.

"तुम बहुत ईमानदार हो, बेटा," मिस्टर वाशिंगटन ने कहा. "और वो मेरे लिए किसी भी चेरी के पेड़ से ज्यादा मूलयवान है.“

बेशक, जॉर्ज के पिता निराश थे. अब कोई चेरी की मिठाई नहीं होगी. लेकिन सच बताने के लिए उन्हें अपने बेटे पर गर्व था. "यह हमेशा याद रखना, हमेशा सच बोलना," जॉर्ज के पिता ने जोड़ा.

जॉर्ज उन शब्दों को कभी नहीं भूला. उसके लिए वो पूरे जीवन के लिए एक सबक था.



ईमानदारी की कहानी



युवा जॉर्ज वॉशिंगटन को अपने माता-पिता से कुल्हाड़ी मिलने की ख़ुशी थी. फिर भी जॉर्ज उसके सावधान नहीं था और उसने अपने पिता के चेरी के पेड़ को काट दिया. जब उसने अपनी गलती महसूस की तो फिर उसने क्या किया? जॉर्ज ने अपने पिताजी से गलती को छिपाने की कोशिश नहीं की. जॉर्ज जानता था कि सच बताना ही सही होगा. हालाँकि उसके पिताजी उसे दंड दे सकते थे, पर पिताजी ने उसे माफ़ किया और साथ में उसकी ईमानदारी की उन्होंने प्रशंसा भी की. कभी-कभी सच बोलना डरावना लगता है. क्या सजा मिलने के बावजूद तुमने कभी सच बोला है? जब कोई आहत हो, या उसे चोट लगे तब अक्सर ईमानदार होना मुश्किल होता है. डर के बावजूद सच बोलना हमेशा बेहतर होता है.

समाप्त